Vol 4 Issue 3 Sept 2014

ISSN No :2231-5063

International Multidisciplinary Research Journal

Golden Research Thoughts

Chief Editor
Dr.Tukaram Narayan Shinde

Publisher
Mrs.Laxmi Ashok Yakkaldevi

Associate Editor
Dr.Rajani Dalvi

Honorary
Mr.Ashok Yakkaldevi

Welcome to GRT

RNI MAHMUL/2011/38595 **ISSN No.2231-5063**

Golden Research Thoughts Journal is a multidisciplinary research journal, published monthly in English, Hindi & Marathi Language. All research papers submitted to the journal will be double - blind peer reviewed referred by members of the editorial board.Readers will include investigator in universities, research institutes government and industry with research interest in the general subjects.

International Advisory Board

Flávio de São Pedro Filho
Federal University of Rondonia, Brazil

Kamani Perera
Regional Center For Strategic Studies, Sri Lanka

Janaki Sinnasamy
Librarian, University of Malaya

Romona Mihaila
Spiru Haret University, Romania

Delia Serbescu
Spiru Haret University, Bucharest, Romania

Anurag Misra
DBS College, Kanpur

Titus PopPhD, Partium Christian University, Oradea,Romania

Mohammad Hailat
Dept. of Mathematical Sciences, University of South Carolina Aiken

Abdullah Sabbagh
Engineering Studies, Sydney

Ecaterina Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest

Loredana Bosca
Spiru Haret University, Romania

Fabricio Moraes de Almeida
Federal University of Rondonia, Brazil

George - Calin SERITAN
Faculty of Philosophy and Socio-Political Sciences Al. I. Cuza University, Iasi

Hasan Baktir
English Language and Literature Department, Kayseri

Ghayoor Abbas Chotana
Dept of Chemistry, Lahore University of Management Sciences[PK]

Anna Maria Constantinovici
AL. I. Cuza University, Romania

Ilie Pintea,
Spiru Haret University, Romania

Xiaohua Yang
PhD, USA

......More

Editorial Board

Pratap Vyamktrao Naikwade
ASP College Devrukh,Ratnagiri,MS India

R. R. Patil
Head Geology Department Solapur University,Solapur

Rama Bhosale
Prin. and Jt. Director Higher Education, Panvel

Salve R. N.
Department of Sociology, Shivaji University,Kolhapur

Govind P. Shinde
Bharati Vidyapeeth School of Distance Education Center, Navi Mumbai

Chakane Sanjay Dnyaneshwar
Arts, Science & Commerce College, Indapur, Pune

Awadhesh Kumar Shirotriya
Secretary,Play India Play,Meerut(U.P.)

Iresh Swami
Ex - VC. Solapur University, Solapur

N.S. Dhaygude
Ex. Prin. Dayanand College, Solapur

Narendra Kadu
Jt. Director Higher Education, Pune

K. M. Bhandarkar
Praful Patel College of Education, Gondia

Sonal Singh
Vikram University, Ujjain

G. P. Patankar
S. D. M. Degree College, Honavar, Karnataka

Maj. S. Bakhtiar Choudhary
Director,Hyderabad AP India.

S.Parvathi Devi
Ph.D.-University of Allahabad

Sonal Singh,
Vikram University, Ujjain

Rajendra Shendge
Director, B.C.U.D. Solapur University, Solapur

R. R. Yalikar
Director Managment Institute, Solapur

Umesh Rajderkar
Head Humanities & Social Science YCMOU,Nashik

S. R. Pandya
Head Education Dept. Mumbai University, Mumbai

Alka Darshan Shrivastava
Shaskiya Snatkottar Mahavidyalaya, Dhar

Rahul Shriram Sudke
Devi Ahilya Vishwavidyalaya, Indore

S.KANNAN
Annamalai University,TN

Satish Kumar Kalhotra
Maulana Azad National Urdu University

Address:-Ashok Yakkaldevi 258/34, Raviwar Peth, Solapur - 413 005 Maharashtra, India
Cell : 9595 359 435, Ph No: 02172372010 Email: ayisrj@yahoo.in Website: www.aygrt.isrj.net

Golden Research Thoughts
ISSN 2231-5063
Impact Factor : 2.2052(UIF)
Volume-4 | Issue-3 | Sept-2014
Available online at www.aygrt.isrj.net

GRT

''दिनकर और प्रगतिशीलता का मिथक''

संध्या सिंह

विभागाध्यक्ष हिन्दी विभाग, डी.ए.वी.पी.जी. महाविद्यालय, लखनऊ।

सारांश :- मैनेजर पाण्डेय के इस कथन से दिनकर की कविता को एक नए आलोक में देखना संभव होगा – "मार्क्सवाद से दिनकर का संबंध कैसा था? मार्क्सवाद से दिनकर का संबंध राग का भी था और विराग का भी। मार्क्सवाद के जो उद्देश्य हैं उन उद्देश्यों से उनका संबंध राग का था जो उनकी कविता से सिद्ध होता है। लेकिन हिंदी के मार्क्सवादियों के व्यवहार से उनका संबंध विराग का था। दूसरी बात यह है की हिंदी के प्रगतिशील कवियों से उनका संबंध राग का था लेकिन हिंदी के मार्क्सवादी आलोचकों से उनका संबंध विराग का था। अधिकांश मार्क्सवादी आलोचकों ने दिनकर की आलोचना की। इसका कारण यह है की हिंदी के अधिकांश मार्क्सवादी आलोचकों ने सिद्धांत के आधार पर नहीं सुविधा के आधार पर आलोचना लिखी।

प्रस्तावना

राम विलास शर्मा ने सिद्धांत के आधार पर आलोचना लिखि। इसलिए अकेले उन्होंने दिनकर के उर्वषी विवाद में भाग लेते हुए दिनकर के पक्ष में लिखा।" दिनकर जब हिंदी कविता में आये वह समय कविता में छायावाद का था। छायावाद की पहली विशेषता यह थी की वह सामान्य जन से दूर की कविता थी। उसकी भाषा तत्सम काव्य भाषा थी। वह स्वाधीनता आंदोलन का दौर था जनता लड़ मर रही थी और अपने समय की कविता में जीवन के संघर्षों की आवाज़ सुनना चाह रही थी जो छायावाद की कविता में सुनाई नहीं पड़ रही थी। अब दिनकर के इस कथन पर दृष्टि डालते हैं तो यह स्पष्ट होता है की उनके लिए छायावाद की अलग परिभाषा थी – "छायावाद हिंदी मे उद्दाम वैयक्तिकता का पहला विस्फोट था। केवल साहित्य की शैली ही नहीं समग्र जीवन की परम्पराओं रूढ़ियों शास्त्रनिर्धारित मर्यादाओं एवं मनुष्य की चिंता को सीमित करने वाली परिपाटियों के विरुद्ध जन्में हुए एक वयापक विद्रोह का परिणाम था तथा मनुष्य की दबी हुई स्वतंत्रता की भावना को प्रत्येक दिशा में उभारने वाला था छायावाद।" ज़ाहिर है दिनकर छायावाद को समग्र विद्रोह मानते हैं। दिनकर के इस मूल्यांकन के आलोक में ही उनकी पूरी काव्य यात्रा को देखने की आवश्यकता है।

''तबीयत चाहती है, बात कुछ तुम को सुनाऊँ
मगर तुम कौन हो, जो पंक्ति मेरी पढ़ रहे हो?
कला के पारखी हो, चॉदनी के चाहने वाले?
हवा की साँस में जो दर्द है, उसको समझते हो?

दिनकर की इन चार पंक्तियों में उनके सम्पूर्ण व्यक्तितव की एक झलक है, और उन की काव्य–यात्रा की तरफ एक संकेत भी है। एक साथ शक्ति और सौन्दर्य के उपासक, भावुकता और बौद्धिकता के सन्तुलित परन्तु निरन्तर उर्ध्वगामी बेचैन कामना के प्रतीक, अनल के कवि, मृत्तिका पुत्र दिनकर उस प्रदेश की भूमि पर जनमे जहाँ डूबते सूर्य को इस अडिग आस्था के साथ पूजा जाता है कि वह कल सुबह पुनः अपनी जीवनदायिनी ऊर्जा सहित उदित होगा। अपने समय के इस सूर्य ने चौदह वर्ष की अवस्था में सन 1922 ई0 में अपना पहला गीत लिखा। ब्रिटिश साम्राज्य में सब–रजिस्ट्रार के सरकारी पद पर काम करते हुए भी अपनी कविताओं के कारण स्वाधीनता आन्दोलन के चारण, विद्रोही और वैतालिक कहलाए। एक शिविर ने उन्हें दिग्भ्रमित कहा तो दूसरे तबके ने उन्हें 'राष्ट्रकवि' की संज्ञा दी। वस्तुतः दिनकर की कविताओं की पड़ताल के लिये हिमें थोड़ी दूर हट कर खड़ा होना होगा। जहाँ से असफलताओं के महिमामंडन का देवदासीय (श्रतचन्द) युग स्पष्ट दिखाई दे। क्यों कि बंगाल के द्वार को हम उस युग के सन्दर्भ में अनदेखा नहीं कर सकते। छायावाद गवाह है। यह वह युग था जब निराशा–हताशा आत्मघाती व्यक्तित्व भी

नायक हो सकते थे। बस एक भावुक, संवेदनात्मक और दार्शनिक आभा से युक्त दृष्टि अपेक्षित थी। वह भावुकता अपने हिस्से का इतिहास रच कर नेपथ्य में चली गई, पर अपनी प्रभावपूर्ण गहरी निशानियां छोड़ गई। फिर कन्धे पर झोला लटकाए, बढ़ी दाढ़ी, और चश्में के पीछे से झाँकती जीवन्त आँखें जो कविता रचती थीं उन में विद्रोह के तेवर थे, परिवर्तन के अह्वान की ऊर्जा थी। और थी एक गहरी आस्था। स्वतंत्रता मिली और मोहभंग का युग प्रारम्भ हुआ। पूरी तरह पता भी नहीं चला कि उस विद्रोही तेवर का शमन कब अनजाने में चुपचाप हो गया। समाज भयावह सीमा तक संवेदनाहीन होता चला गया। और एक मशीनी स्वीकृति का भाव आ गया, हर क्षेत्र की विरूपता के प्रति। सभ्यता व्यक्ति केन्द्रित होती चली गई, और व्यक्ति आत्मकेन्द्रित। जबकि दिनकर के काव्य में हमें उनकी क्रान्तिधर्मिता के साथ ही शोषित तबके के लिये सह और सम अनुभूति सर्वत्र मिलती है। उनकी प्रगतिशील चेतना निर्विवाद है।''पर जिनकी अस्थियां चबाकर पीकर शोणित तणका जीती है यह शांति दाह कुछ पूछो उसके मन का'' दिनकर कुछ हद तक, कुछ मायनों में कबीर की तरह संधिरेखा पर खड़े थे। इसी लिए दिनकर की कविता मोहभंग के बीच जीवन की पुर्नरचना की तरफ कदम बढ़ाती प्रतीत होती हैं।

डॉ0 विजेन्द्र नारायण सिंह ने लिखा है–''दिनकर गंगा के तट पर बारो गॉव सिमरिया घाट में पैदा हुए थे जहाँ प्रकृति की समृद्धि के साथ भयंकर गरीबी थी। रेणुका में संकलित 'कविता की पुकार' नामक कविता जो कि हिन्दी में स्वच्छंदतावाद का घोषणा पत्र है वस्तुतः उपनिवेश द्वारा प्रदत्त गरीबी का मार्मिक चित्रण प्रस्तुत करती है।''2

अपनी चर्चित कृति ''शुद्ध कविता की खोज'' में दिनकर लिखते हैं– ''कविता गाने की नहीं, बिसूरने की चीज है। कविता ताली बजाने की नहीं, सुनकर अपने भीतर डूब जाने की वस्तु है। कविता आदमी का सुधार नहीं करती है, वह उसे चौकाना जानती है, धक्के देना जानती है, उस की चेतना की मुंदी आंखों को खोलना जानती है।''3

स्वाधीनता आन्दोलन और दो विश्व–युद्धों के बीच वयस्क होते दिनकर का सौन्दर्यप्रिय मन युगधर्म की पुकार से बेचैन और घायल होता रहा। आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी का मानना है– ''उस का मन व्यक्त रूप में मस्ती और मौज का उपासक है .... किन्तु उसके भीतर अव्यक्त और अलक्षित रूप से सामाजिक चेतना का वेग है......... इन द्विविध वृत्तियों के संघर्ष से दिनकर के काव्य में वह प्रवाह उत्पन्न हुआ है, जो कवियों में नहीं मिलता। .... यौवन और जीवन उसे आकृष्ट करते हैं, सौन्दर्य के मोहन संगीत उसे मुग्ध करते हैं, पर वह इनसे अभिभूत नहीं होता।'' दिनकर स्वीकारते हैं कि – ''संस्कारों से मैं कला के सामाजिक पक्ष का प्रेमी अवश्य बन गया किन्तु मन मेरा भी चाहता था कि गर्जन–तर्जन से दूर रहूं और केवल ऐसी कविताएं लिखूं जिनमें कोमलता और कल्पना का उभार हो। .... सुयश हतो मुझे ''हुंकार'' से ही मिला लेकिन आत्मा मेरी ''रसवन्ती'' में बसती है।''4

अपनी काव्य–यात्रा के प्रारम्भिक चरण में दिनकर छायावादी काव्यबोध से परे नहीं हैं, पर साथ ही उनके व्यक्तित्व का द्वन्द्व भी उपस्थित है। सचेत मोहाविष्ट।

''तू महाशून्य में खोज रहा
किस जटिल समस्या का निदान?
उलझन का कैसा विषम जाल?
मेरे नगपति! मेरे विशाल!

जब स्वयं दिनकर कहते हैं कि – ''पंत के सपने को मैं मैथिलीशरण की सफाई के साथ लिखना चाहता था।''5 तो छायावादी कुहेलिका और द्विवेदी युगीन स्थूलता से मुक्त होने की उनकी चाहना उन्हें एक तीसरा आयाम देती है, जो साहित्यक गुटों से परे खड़ा हो कर कहता है –

''उत्तर के गाहकों! निराशा से घबड़ा कर
मरो नहीं, चिंतनशील यह देश
नाप में बहुत बड़ा है।
देखो जहाँ, वहीं–
समाधान देने वाला निश्चित खड़ा है।''

दिनकर की पहली रचना ''प्रणभंग6 के नैतिक संकट का समाधान भक्ति में होना उनके प्रारम्भिक दौर की मनोदशा को दर्शाता है, जो उत्तरोत्तर द्वन्द्व की तरफ बढ़ती गई, और राह का यह पथिक प्रश्नों का जखीरा लिए समाधानों का अन्वेषण सागर में उतर कर करता रहा। किनारे खड़े हो कर नहीं। धर्म, राष्ट्रीयता, युद्ध, प्रेम, आधुनिकता, विज्ञान और अन्ततः आध्यात्म दिनकर के चिन्तन के सोपान रहे हैं। सत्य से तिहरी दूरी के सिद्धान्त को अपने मौलिक तरीके से ध्वस्त करते दिनकर तटस्थता को अपराध की श्रेणी में रखते हैं और इन पंक्तियों के साथ दिनकर हर युग के लिये प्रासंगिक हो जाते हैं।–

''समर शेष है
नहीं पाप का अपराधी केवल व्याध
जो तटस्थ है, जो पदस्थ है
समय गिनेगा उनका भी अपराध''

दिनकर बेचैन है। दिनकर सोचने को बाध्य कर देते हैं। उनके प्रश्न मन–मस्तिष्क दोनों को मथते हैं। उनकी

स्वप्नजीविता युग–धर्म के धरातल पर सचेत खड़ी है।उन्हें गाँधी और भगत सिंह दोनों उद्वेलित करते हैं। अपनी पूरी यात्रा में 'प्रणभंग'' से 'कुरूक्षेत्र' तक पहुँच कर दिनकर युद्ध को अन्ततः मानव नियति की विषमता से जोड़ते हैं। हिंसा–अहिंसा की गहरी परतों की विवेचना करते हैं और तत्कालीन परिदृश्य में अर्न्तराष्ट्रीय युग बोध से जुड जाता है। दिनकर लिखते हैं कि अगला युग विचारक कवियों का युग होगा''7 तो यह अकारण नहीं।

दिनकर निरपेक्ष है पर उदासीन नहीं। कुरूक्षेत्र वस्तुतः बाह्य युद्ध का क्षेत्र ही नहीं, आन्तरिक युद्ध का भी स्थल है। स्वयं दिनकर कहते हैं – ''कुरूक्षेत्र' न तो दर्शन है और न किसी ज्ञानी के प्रौढ़ मस्तिष्क का चमत्कार। यह तो अन्ततः एक साधारण मनुष्य का शंकाकुल हृदय ही है, जो मस्तिष्क के स्तर पर चढ़ कर बोल रहा है।'' और ''जो आदमी अपने पुण्य के कारण बर्बाद होता है, दुखांत नाटक का असली पात्र वहीं हैं।7

किसी विशिष्ट सांचे में जड़े सिद्धान्त और साधारण मनुष्य के दुःखों के द्वन्द्व की दूरी की गाथा है–''कुरूक्षेत्र''। आजादी के बाद के मोहभंग से उपजे अवसाद को 'मरघट की धूप में कवि ने अभिपव्यक्ति दी है। –

''दोपहरी का अंधकार, निष्प्राण ज्योति की बेला
मही बड़ी निस्संग, व्योम पर रवि भी बड़ा अकेला''

स्वतंत्रता के बाद सत्ता के सुख में लिप्त राजनेताओं को दिनकर की चेतावनी– ''सिंहासन खाली करो कि जनता आती है'' – बिहार (जय प्रकाश) आन्दोलन के लिये सूत्र वाक्य बन गया था। ''आग की भीख9 कविता में दिनकर की छटपटाहट अपने अस्तित्व को तत्कालीन राष्ट्रीय आन्दोलन के सन्दर्भो में सरोकारों से युक्त बने रहने के लिये कह उठती है–

''आकाश पर अनल में, लिख दे अदृश्य मेरा
भगवान इस तरी को भरमा न दे अंधेरा।
तम बेधनी किरण का संधान मांगता हूं,
ध्रुव की कठिन घड़ी में पहचान मांगता हूं।

दिनकर के द्वन्द्व उनकी रचनात्मकता को लगातार धार देते रहे। उनका अअसंतुष्ट मन 'रश्मिरथी'10 तक आते आते अवसाद ग्रस्त होता गया। दिनकर के काव्य यात्रा की विभाजक रेखा है 'नीलकुसुम'। इसमें दिनकर सभ्यता–समीक्षा की ओर मुड़ते जाते हैं। –

''नहीं वंशधर तुम अतीत के, नूतन योनि अपर हो,
जो न कभी पहले जनमा था, वह बौद्धिक बर्बर हो।
......धर्म को, श्रद्धा को मत त्यागो।
निरी बुद्धि के लिये भावना का मत दलन करो रे!''11

'कुरूक्षेत्र' से 'परशुराम की प्रतीक्षा'12 तक की यात्रा में तत्कालीन राष्ट्रधर्म की भावना का बलवती होना भी दिनकर की सचेत सामयिक दृष्टि का द्योतक है। जो कि मानवता के व्यापक परिदृश्य (जो 'कुरूक्षेत्र में था) का यहाँ अभाव है। गांधी की सविनय अवज्ञा के अन्दर छिपी लौह दृढ़तता के कहीं अन्दर से कायल दिनकर कहते हैं –

''आज अहिंसा नहीं
कसौटी पर गांधी की आग है
.....यह है पुण्य या कि दुष्पाप?
आज सारा विवाद त्यागो।
गाँधी की रक्षा करने को गाँधी से भागो।''

आपात धर्म का पालन करती कुछ कविताओं से परे दिनकर की राष्ट्रीयता विश्वमानवता के समानान्तर चलने का प्रयास करती प्रतीत होती है। दिनकर नई कविता को ''बुद्धि और कल्पना के चौक पे खड़ी'' कहते हैं। दिनकर की आत्मनिष्ठा ''कायेला और कवित्व''13 तक आते–आते बौद्धिक और वस्तुपरक होती जाती है। पर 'कोयला और कवित्व' से पहले 'परशुराम की प्रतीक्षा' और 'उर्वशी' का प्रकाशन हुआ। 'उर्वशी'14 हिन्दी काव्य जगत की एक परिघटना है। डॉ0 नामवर सिंह के अनुसार–''एक केन्द्र पर इतने प्रकार के विचारों की टकराइट के ऐसे अवसर कम ही आते हैं।'' डॉ0 रामविलास शर्मा का मानना है – ''आनन्द की आकांक्षा के साथ अतृप्ति के उद्वेग को व्यक्त करने के कारण निरपेक्ष ज्ञान की तृषा के साथ सापेक्ष ज्ञान की उदात्त अभिव्यंजना के कारण – 'उर्वशी' हिन्दी काव्य का कीर्ति स्तम्भ है।'' मुक्तिबोध (आलोचना में)15 'उर्वशी' को कामात्मक आध्यात्म का काव्य मानते हुए कहते हैं कि – ''एक दुर्निवार कामुक अहं ने अस्वाभावित ढंग से आध्यात्मिक मुकुट पहनने की कोशिश की है।'' ''सृजन की मनोभूमि''16 में दिनकर 'कामाध्यात्म' शब्द के प्रयोग पर लिखते हैं– ''कामाध्यात्म शब्द बड़ा गोल मटोल है यदि इसका अर्थ काग और आध्यात्म के बीच द्वन्द हो तो इसका प्रयोग सही माना जायेगा अन्यथा इस शब्द का प्रयोग 'उर्वशी' काव्य के सम्बन्ध में नहीं किया जाना चाहिये।'

यह भी कि सारी अकादमिक बहसों से परे भूमिका में स्वयं दिनकर का यह लिखना कि– ''मुझे लगता है, मैने इसकी रचना नहीं की है, यह अदृश्य रूप से कहीं लिखा–लिखाया पड़ा हुआ था। मैने मात्र इसका अनुसंधान कर लिया है।'' एक भिन्न

दृष्टि की तरफ संकेत तो करता ही है। 'उर्वशी' की कथा के मूल स्त्रोत से परे आधुनिक संदर्भो में दिनकर द्वारा इस विषय को चुना जाना अछूता तो नहीं कह सकते पर कुछ निषिद्ध क्षेत्र में अतिक्रमण जैसा ही हो जाता है, क्यों कि दिनकर की 'उर्वशी' 'भागवत' की भांति देवताओं के श्राप से नहीं बल्कि स्वेच्छा से पुरूरवा के पास आती है। दिनकर शतपथ ब्राह्मण और भागवतकार की तरह 'उर्वशी' से रहने के लिये शर्ते प्रस्तुत नहीं कराते बल्कि 'उर्वशी' स्वेच्छा से पुरूक्षा के प्रति समर्पित हो जाती है।

दिनकर जब इस वैदिक कथानक को युग–सापेक्ष बनाते हैं तो उनकी 'उर्वशी' भी युगानुरूप प्रसांगिक हो जाती है। उसे व्याख्यायित करने के लिये दिनकर की ही दृष्टि अपेक्षित है। ''धर्म नैतिकता और विज्ञान''17 नामक लेख में दिनकर लिखते हैं – ''कविताओं में हम जिस नारी का बखान सुनते हैं, वह किसी की भी बेटी, बहन या भार्या नहीं होती वह तो अनामिका, अशरीरी कल्पना की प्रतिमा है जिसके अंग पर उम्र के दाग नहीं लगते, जो स्पर्श से परे खड़ी हमारे सपनों पर राज करती है चूंकि वह कोई एक नारी नहीं है, इसलिये वह सभी नारियों का प्रतिनिधित्व करती है।'' वस्तुतः 'उर्वशी' में इन्द्रिय सुख को अतीन्द्रिय आनन्द की अनुभूति का अनिवार्य सोपान मान कर चला गया है।

दिनकर की अन्तिम प्रकाशित काव्यकृति है– ''हारे को हरिनाम'' स्वयं दिनकर कहते हैं – ''कुछ मित्र इस नाम से भी चौंके हैं। किन्तु पराजित मनुष्य और किसका नाम लें।'' वस्तुतः दिनकर दो द्वन्दों के चरम शिखर पर खड़े नजर आते हैं। दिनकर की बेचैनी उनकी सतत यात्रा की द्योतक है। यात्रा के अन्त का ठहराव यहाँ नहीं है। यथार्थ का ठोस धरातल उन्हें छोड़ता नहीं, और आसमान उन्हें हमेशा आकृष्ट करता रहा है।

''अच्छे लगते मार्क्स, प्रेम हैं अधिक किन्तु गाँधी से,
प्रिय है शीतल पवन, प्रेरणा लेता हूँ आँधी से।
एक नहीं, दोनों ध्रुव मेरे भीतर धंसे हुए हैं,
सभी सत्य अपने–अपने शिखरों पर बसे हुए हैं।''

कविता शास्त्र नहीं है। वह संवेगों की अभिव्यक्ति है। और संवेग निजी सम्पदा है। पर इस सत्य से मुँह नहीं मोड़ा जा सकता कि वही कृतियां सार्थक होती हैं जो सामाजिक यथार्थ की परिधि में ना बंधी रह कर अर्न्तविषयी होती हैं। कवि अपने युग से विषय चुनता है। चुनेगा ही। अगर पीछे भी पलटता है तो तभी जब उसकी अपनी समझ में वे विषय प्रासंगिक होने की सामग्री रखते हों। तो सारा दारोमदार इस बात पर आ कर टिकता है कि कवि की संवेदना का धरातल क्या है। उसके उद्वेग कितने निजी, कितने व्यक्तिगत हैं, और उसकी संप्रेषण क्षमता क्या है। कहीं निज–सत्य को वह युग–सत्य साबित करने पर तो नहीं तुला। ''वस्तुतः दिनकर के हिन्दी कविता को जनता से जोड़ा है।

स्वयं दिनकर कहते हैं – ''मैं समय का पुत्र हूँ, और मेरा सबसे बड़ा कार्य है कि मैं अपने युग के क्रोध, अधीरता और बेचैनियों को सबलता के साथ बाँध कर छन्दों में उपस्थित कर दूंगा। .... मैं शब्दों को चुन कर बिठाने में श्रम नहीं करता। मेरी दृष्टि रहती है कि भीतर जो आग उबल रही है, फूट कर बाहर आ रही है कि नहीं।''पूरे दिनकर को धैर्य, संवेदना और आत्मीयता से पढ़े जाने के बाद उनकी यात्रा एक आम मनुष्य के खास होने की यात्रा लगती है। अपनी खूबियों – खांमियों सहित। अपने असन्तोष, बेचैनियों सहित, आर0के0 नारायण के गाइड की भांति यहाँ जिजीविषा है, स्वप्नों की छलांग है, यथार्थ की ठोकर है, आत्म निरीक्षण है, उदात्तता है, ठहराव है पर अन्ततः ययाति की तृष्णा नहीं है कवि में बल्कि फीनिक्स पक्षी की तरह विसर्जन की अस्थियों से नए जीवन के प्रार्दुभाव के स्वप्नदृष्टा हैं दिनकर। .... युगानुरूप मनुष्य में निहित ईश्वरत्व और ईश्वर में मनुष्य की पारिकल्पना के पक्षधर।

–: संदर्भ :–

1.कुरूक्षेत्र – दिनकर – 1946 लोक भारती प्रकाशन
2.विजेन्द्र नारायण सिंह : दिनकर – पृ0 57
3.शुद्ध कविता की खोज : दिनकर
4.शुद्ध कविता की खोज : दिनकर
5.शुद्ध कविता की खोज : दिनकर
6.प्रण मंत्र
7.काव्य की भूमिका : दिनकर पृ0 103
8.मरघट की धूप – दिनकर
9.आग की भीख – दिनकर
10.रश्मिरथी – दिनकर – लोकभारती, इलाहाबाद
11.नील कुसुम : दिनकर
12.परशुराम की प्रतीक्षा
13.कोयला और कवित्व
14.उर्वशी
15.आलोचना
16.सृजन की मनोभूमि – दिनकर

17.धर्म नैतिकता और विज्ञान – दिनकर
18.हारे को हरिनाम – दिनकर
19.समकालीन जनमत : रामजी राय (सम्पादक)
अंक –3, 2002– पृ0–136

संध्या सिंह
विभागाध्यक्ष हिन्दी विभाग, डी.ए.वी.पी.जी. महाविद्यालय, लखनऊ।

Publish Research Article
International Level Multidisciplinary Research Journal
For All Subjects

Dear Sir/Mam,

We invite unpublished Research Paper,Summary of Research Project,Theses,Books and Book Review for publication,you will be pleased to know that our journals are

Associated and Indexed,India

- International Scientific Journal Consortium
- OPEN J-GATE

Associated and Indexed,USA

- EBSCO
- Index Copernicus
- Publication Index
- Academic Journal Database
- Contemporary Research Index
- Academic Paper Databse
- Digital Journals Database
- Current Index to Scholarly Journals
- Elite Scientific Journal Archive
- Directory Of Academic Resources
- Scholar Journal Index
- Recent Science Index
- Scientific Resources Database
- Directory Of Research Journal Indexing

Golden Research Thoughts
258/34 Raviwar Peth Solapur-413005,Maharashtra
Contact-9595359435
E-Mail-ayisrj@yahoo.in/ayisrj2011@gmail.com
Website : www.aygrt.isrj.net